

क्या हनुमानजी ने लंका में सचमुच आग लगाई थी?

सरदार यशवन्तसिंह वर्मा

कृत

आर्य संगीत रामायण

के पादटिप्पणी लेखों से (पृष्ठ ५६८ – ५७४)

लंका दहन के विषय में भिन्न भिन्न रचिताओं ने विभिन्न प्रकार की कल्पनायें की हैं यथा-

१ हनुमान की पूंछ पर बहुत सी रुई और तेल डालकर आग लगाकर छोड़ दिया, जिससे उसने लंका में आग लगा दी।

२ हनुमान की एक बनावटी पूंछ बना कर आग लगा दी।

३ बहुत सी रुई इकट्ठी की गई कि इसमें आग लगाकर हनुमान को बीच में डाल दिया जाये और जिस प्रकार उसने मेरा हृदय दग्ध किया है उसी प्रकार आप धीरे धीरे जलकर मरे। परन्तु हनुमान ने राक्षसों को ही पकड़ पकड़ कर उस आग में डालना आरम्भ कर दिया, जो उस प्रज्वलित रुई के ढेर से निकल भागे, उनके जलते हुए कपड़ों से अन्य स्थानों में भी आग लग गई।

४ हनुमान को रात्रि के समय लंका में भिन्न भिन्न बाजारों और गली कूचों में उपेक्षित तथा लज्जित करने के अभिप्राय से फिराया जा रहा था किन्तु हनुमान उनके फन्दे से निकल गया और एक मशालची उसको पकड़ने दौड़ा, तो हनुमान ने उसकी मशाल छीन कर उसको मारना आरम्भ किया जिससे एक मकान या दूकान में अग्नि की चिंगारियाँ गिर गईं और वह जलने लगी और आग भड़कते भड़कते सारी लंका में फैल गई, इत्यादि इत्यादि।

परन्तु मुझे इस बात को स्वीकार करने में कि लंका इस प्रकार जलाई गई संकोच है। सबसे बड़ी शंका जो इसके सम्बन्ध में उत्पन्न होती है वह यह कि हनुमान जी जैसा विद्वान तथा धार्मिक पुरुष एक ऐसे पापयुक्त कार्य को करे कि जिससे लाखों निर्दोष और पापरहित मनुष्य जल कर राख का ढेर हो जायें। दोष था तो रावण का न कि लंका निवासियों का जिन में से प्रायः बहुतेरों को रावण की इस करतूत का कदाचित् त्रान भी नहीं था। इस पर आश्चर्य यह है कि सम्पूर्ण लंका जलकर राख हो जाए और विभीषण के मकान को आंच भी न आए। अथवा जब समस्त लंका में प्रलयकाल उपस्थित हो, कोई घर जलने से न बचे, स्त्री और बालकों के आर्तनाद से पृथ्वी और आकाश गूँज उठे, किन्तु प्रहस्त मन्त्री रावण से यह कहे कि मैं तो उस समय अपने घर में विश्राम कर रहा था, मुझे यह बात बिल्कुल ज्ञात नहीं, कैसी विचित्र बात है।

यदि उपरोक्त कल्पनाओं को भी ध्यानपूर्वक देखा जावे तो कुछ प्रमाण जनक नहीं, स्वतः उनसे कई प्रकार की शंकाये उत्पन्न होती हैं। अब हम उनमें से प्रत्येक का विचार स्वतन्त्रता से करते हैं:-

१ वर्तमान काल में किसी को भी यह स्वीकार करने में इंकार नहीं कि हनुमान जी एक विद्वान धर्मात्मा और वीर पुरुष थे न कि बन्दर। अतः न उनकी कोई पूंछ थी न उस में आग लगाई गई।

२ हनुमान को एक बनावटी पूंछ लगा कर और उस पर बहुत से वस्त्र लपेटकर आग लगा दी जावे और फिर उनको स्वतन्त्र भी कर दिया जावे एक भ्रम पूर्ण बात है क्योंकि एक शत्रु के हाथ में हानि पहुंचाने वाली वस्तु देकर बुद्धिमान व्यक्ति इतनी स्वतन्त्रता छोड़ इतना अवकाश भी नहीं दे सकता कि वह अपनी इच्छा से जहाँ चाहे चल फिर सके।

३ किसी मनुष्य को जलाने को तेल की एक दो बोतल काफी हो सकती हैं जैसा कि आजकल भी ऐसी घटनायें सुनने में आई हैं कि अमुक व्यक्ति ने मिट्टी के तेल की बोतल अपने वस्त्र पर डाल कर आग लगा ली और आत्महत्या करली, किसी पर अकस्मात् जलता लैम्प गिर गया और सब शरीर के वस्त्रों में आग लग जाने से बहुत से बहुत सी मृत्युयें हुई हैं फिर समझ में नहीं आता कि अकेले हनुमान के जलाने हेतू सहस्रों मन रुई एवम् तेल का क्या प्रयोजन था। इसके सिवाय यह काम कैसा घृणित तथा असभ्यतापूर्ण है। माना कि रावण असीम विषयी था किन्तु इससे यह प्रकट नहीं होता कि वह इस प्रकार पाषाण हृदय और दयारहित भी था। एक दोष को सामने रखकर उसके गुणों पर पानी फेर देना सर्वथा अनुचित है। प्रथम तो यह दण्ड कैसा असभ्यता पूर्ण है फिर यह बर्ताव किया भी किसके साथ जावे एक दूत के साथ, जिससे समस्त सहयोगी राष्ट्रों में उसकी उपेक्षा हो, कदापि मानने योग्य घटना नहीं।

४ किसी पुरुष को अपमानित करने के लिए दिन का समय उपयुक्त हो सकता है जिस समय सारा संसार उसको और वह सारे संसार को देख सके, न कि रात्रि का अन्धकारमय समय जब कि समस्त संसारी जीव अपने अपने घरों में विश्राम कर रहे हों। रात्रि का अन्धकार किसी का दोष छिपाने में सहायक हुआ करता है न कि उसको विख्यात करने में, इसलिए प्रायः चोरी छिपे के काम रात्रि के समय ही किए जाते हैं। फिर समझ में नहीं आता कि रावण ने हनुमान को उपेक्षित करने में रात का समय अच्छा समझा। यद्यपि घटना से स्पष्ट है कि हनुमान प्रातः पकड़ा गया और उसी समय रावण के सम्मुख उपस्थित किया गया फिर न जाने दिन भर क्या ताने तनते रहे। तथापि यह भी मान भी लिया जाय कि हनुमान को सायंकाल ही पकड़ा गया अथवा उन्हें आपस में झगड़ते झगड़ते सांझ हो गई तो रावण कोई खानाबदोश तो था नहीं कि उसके पास हनुमान को रात भर रखने के लिये कोई बन्दीगृह आदि न था। तात्पर्य रात का समय तो पुरुष को सजा के लिये किसी प्रकार भी उचित नहीं हो सकता फिर हनुमान जैसे मनचले मनुष्य के लिये जो रावण के साथ भरी सभा में इस प्रकार निर्भयता से बातें करता रहा हो। इस पर आश्चर्य यह है कि हनुमान अपने संरक्षकों से छूट कर भागता है तो उसको पकड़ने के लिये कौन पीछे दौड़ता है? एक मशालची! कैसी उपहास पूर्ण बात है।

वास्तव में यह अलंकार है, केवल अग्नि से जलने का नाम जलना, अथवा तलवार बर्छी से घायल होने का नाम घायल होना नहीं बल्कि जलना जलाना, घायल होना तथा घायल करना कई प्रकार का है, किसी की मान मर्यादा को देखकर द्वेषाग्नि से जलना, सौतिया डाह से जलना, किसी की ताने भरी बात सुनकर जलना, जिह्वा की नोक से घायल करना, नयनों के बाण से घायल होना इत्यादि।

अस्तु सचमुच बात यह है कि हनुमान की निर्भयतापूर्ण बातें सुन रावण जल भुन कर कोयला हो और जब वह भरी सभा में इस प्रकार उसको अपमानित कर सब की आँखों में धूल झोंक कर साफ निकल गये तो वह बिल्कुल ही राख हो गया

लकडी जल कोयला हुई कोयला जल भई राख ।

रावण तू ऐसा जला कोयला रहा न राख ॥

बस यही लंका के जलाने की कथा थी अन्यथा वास्तव में लंका जलाई नहीं गई।